अनेकता में एकता

भारत जैसे विशाल देश में मुख्य रूप से तीन प्रकार की संस्कृतियों की धाराएँ प्रवाहित हैं, यथा -- पर्वतीय, मैदानी तथा दक्षिण की समुद्रतटीय। इन तीनों का समन्वित रूप यदि किसी एक स्थान पर देखने को मिल सकता है, तो यह स्थान है काशी। देश की सांस्कृतिक एकता में, जो शिव सन्निहित है, वही शिव इस नगरी के अधिष्ठाता देवता हैं और उस शिव का प्रसार करती है, देवत्व भावापन्न सुरसरिता गंगा की निर्मल धारा, जो शिव के मस्तक पर विराजमान है, अर्थात् उनके ज्ञानकोश में गतिमान है। अनेकत्व में एकत्व का बोध ही सत्य है और सत्य होने के कारण वह शिव है। शिवत्व ही सुंदर होता है। इस दृष्टि से विचार करें तो काशी 'सत्यं शिवं सुंदरम्' की नगरी है। संभवतः इसी भावभूमि पर पहुँच कर हमारे कविकुल- चूड़ामणि गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है --

मुक्ति जन्म महि जानि, ज्ञान खानि
अघ- हानि कर।
जहं वस शंभु- भवानि, सो कासी
सेइय कस न।।

गोस्वामी जी ने तो कल्याण के जनक शम्भु को भारत तक ही सीमित नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व का अधिष्ठाता माना है, जिसकी शक्ति भवव्यापी भवानी है। यों उन्होंने विश्व के कल्याणकारी देवता अर्थात् विश्वनाथ या विश्वेश्वर तक का निवास स्थान काशी को माना है। काशी का अर्थ ही प्रकाश या ज्ञान की पुरी है और ज्ञान के बिना उस शिव की प्राप्ति नहीं हो सकती, जो समस्त अशिव भावों अर्थात् अघों का काल है। जितने भी विष हैं, सभी शिव के आहार हैं। जब वैषम्यों का विनाश हो जाता है, तब मानव संकीर्णताओं से बंधनों से, भव के जाल से मुक्त हो जाता है। शिव की कृपा से यह स्थिति काशी के कण- कण में व्याप्त है, क्योंकि ज्ञान- गंगा के जल से प्रक्षालित होकर यह कल्मषरहित हो चुकी है -- ''काशी के कंकड़ भी शंकर समान हैं।''

काशी शिव को इतनी प्रिय हुई कि कैलाश का रम्य निवास छोड़कर उन्होंने अपनी गंगा के समेत यहाँ आकर डेरा डाला। कैलाश- वासी का यहाँ आगमन ही इस बात का द्योतक है कि पर्वतांचल में विकसित सभ्यता को ज्ञानालोक से प्रभासित काशी के जीवन ने आकृष्ट कर लिया। इसी प्रकार भारत के दक्षिणांचल की द्रविड़ सभ्यता ने भी अपने आराध्य शिव को काशी में विराजमान देखकर इसको अपने तीर्थस्थल के रूप में अंगीकार किया। फलतः यह आनंदकानन हमारी सांस्कृतिक त्रिपथगा का संगम- स्थल बनकर विश्व- वन्द्य बन गया। काशी को यह गौरव वैदिक काल से उपलब्ध है तथा प्रागैतिहासिक युग से ही इसे विद्या के केंद्र के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। चिरकाल से भारत ही नहीं, संपूर्ण विश्व ने शंकर के त्रिशूल पर बसी नगरी के रूप में इसे सर्वोपरि मान्यता प्रदान कर रखी है। साधु- संतों तथा ऋषियों- तपस्वियों की यह साधना- स्थली रही है। विश्व पर्यटन के मानचित्र में इसका अति विशिष्ट स्थान है। विद्वत्ता का प्रमाणपत्र लेने के लिए लोग काशी आते रहे हैं। शास्त्रों का अर्थ यहीं आकर लगता था।

काशी- यात्रा के बिना विद्या अपूर्ण मानी जाती थी, भारत के कोने- कोने के लोग काशीवास की ही अंतिम आकांक्षा संजोये यहाँ आकर रहते थे। जिनको काशी में बसने का सुयोग मिल गया, वे अपने को बड़ा सौभाग्यशाली समझते थे। आज भी भारत यात्रा पर आया प्रत्येक पर्यटक काशी का प्रत्यक्ष दर्शन करने के लिए लालायित रहता है। यहाँ आकर वह धनुषाकार उत्तरवाहिनी गंगा को देखकर अपनी सारी चपलता भूलकर काशी के क्रोड में सिमटी हुई इस अनुपम छटा पर भाव- विभोर हो जाता है। कितने ही पर्यटक तो काशी की विश्व- प्रसिद्धि के आधारभूत सत्य का अन्वेषण करने के विचार से भी यहाँ आते हैं।

दृष्टि संपन्न दर्शक यहाँ की तथोक्त गंदगी और गरीबी के बीच छिपी हुई दिव्यता का दर्शन कर ही लेता है। ज्ञान- दान

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

की प्राचीन परंपरा आधुनिकता के बढ़ते चकाचिक्य के बीच आज भी जीवित है। अन्यत्र दर्शन शास्त्र के गहन अध्येता जैसी बात कहते हैं, वैसी बातें तो यहाँ का जनसामान्य बात- बात में कह देता है। इसका कारण युगों- युगों से यहाँ शिष्य- प्रशिष्य के माध्यम से अक्षुण्ण रूप से प्रवाहित ज्ञान की अमृत- धारा है, जिसके कुछ- न- कुछ बिंदु सभी को सुलभ हो जाते हैं। शिव के कारण यहाँ का जन- जीवन अलमस्ती से भरा है। अन्य स्थानों की भांति यहाँ भौतिक सुखों के पीछे बेतहाशा भाग- दौड़ कभी नहीं रही। पाश्चात्य अर्थप्रधान सभ्यता के प्रभाव से जनता के दृष्टिकोण में कुछ अंतर अवश्य आया है, किंतु आज भी काशीवासियों के अंतर्मन में वही पुरानी सूक्ति कसमसाती रहती है --

चना चबैना गंगा जल,
जो पुरवै करतार।
काशी कबौ न छाँड़िये,
विश्वनाथ दरबार।।

विश्वनाथ के दरबार ने ही देश की नगरियों में काशी को महानगरी का पद दिलाया है। भारत की राजधानी राजनीतिक कारणों से भले ही दिल्ली, आगरा, कलकत्ता या दौलताबाद रही हो, किंतु संस्कृति के विचार से यदि हमारी विश्वबंद्यता की परिधि भारत देश रहा है, तो उसका केंद्र बिंदु वाराणसी अर्थात् काशी ही रहा है। यदि हम सावधानी से भारत के मानचित्र का अवलोकन करें, तो देश का हृदय भाग काशी ही प्रतीत होगा। यहाँ इतना ध्यान रखना आवश्यक है कि उत्तर में भारतीय संस्कृति का क्षेत्र विस्तार तिब्बत तक था। कैलाश, मानसरोवर आदि हमारे ही तीर्थस्थल हैं। इसलिए यदि तिब्बत से कन्याकुमारी तक और कांधार से कामरूप तक हम दृष्टि निक्षेप करें, तो काशी हमारी मातृभूमि के मध्य में विराजमान प्राण- प्रदेश ही सिद्ध होगी।

अब यदि काशी को काशीत्व प्रदान करने वाले घटकों पर हम विचार करें, तो निश्चय ही इसका निर्माण सबके सहयोग का अनुपम प्रतिफल प्रमाणित होगा। भारत के सभी प्रदेशों के लोगों ने, सभी भाषाओं के बोलने वालों ने और सभी मतावलंबियों ने काशी को बनाने में उसी प्रकार अपना उदार अंश दान किया है, जिस प्रकार महिषासुर से उत्पीड़ित होकर सभी देवताओं के अंश से महाशक्ति की अवतारणा हुई थी। जैसे प्रत्येक देवता ने शक्ति को अपने- अपने आयुध और भूषण दिये थे, वैसे ही प्रत्येक प्रांतवासियों ने काशी को अपनी भाषा, रहन- सहन, खान- पान और पहनावा प्रदान किया है। सबने विश्वनाथ को अपना नाथ और काशी को अपनी नगरी माना। महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने विश्वनाथ मंदिर का निर्माण कराया, तो पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह ने उस पर सोना चढ़वा दिया। विभिन्न देशी रजवाड़ों ने ही काशी में गंगा के विभिन्न घाटों का निर्माण कराकर, इस नगरी की सुंदरता में चार चाँद लगाये। कहने का तात्पर्य यह है कि लोगों ने प्रांतीयता के संकीर्ण घेरे को तोड़कर, काशी को अद्वितीय रूप देने में निश्छल योगदान किया।

लघु भारत का स्वरूप

अनेकात्मकता में एकात्मकता का दर्शन करना हो, तो एक बार काशी का परिदर्शन करिये। केदार खण्ड, विश्वेश्वर खण्ड और ओंकारेश्वर खंड के तीन टुकड़ों में बंटी तथा तीन पर्वत- श्रृंगों के त्रिकण्टक पर बसी, इस नगरी में संपूर्ण देश के निवासियों ने अपने- अपने आवास बना लिये हैं। यदि हनुमान घाट पर दक्षिण भारत के कर्नाटक, तमिलनाडु और आंध्रवासियों की बस्ती है, तो केदार घाट, मानसरोवर, देवनाथपुरा और बंगाली टोला में बंगाल की संस्कृति फल- फूल रही है। मानमंदिर, मीरघाट, लक्खी चौतरा, नंदन साहू लेन में मारवाड़ की झलक मिलेगी, तो लाहौरी टोला, ब्रह्मनाल, गाय घाट आदि में पंजाब की प्रतिच्छाया लक्षित होगी। दुधविनायक पर नेपाल निवासियों का बाहुल्य है, तो दुर्गाघाट, ब्रह्माघाट व अगस्त कुण्डा आदि महाराष्ट्र के गढ़ हैं। रामघाट, चौखम्बा आदि में गुजराती मिलेंगे, तो हाल में नयी बनी बस्तियों में सिंधियों, पंजाबियों का जमाबड़ा दिखेगा।

वाराणसी तथा उसके पड़ोस के जिलों के लोग मुख्यतः नगर के पश्चिमार्ध में बसे मिलेंगे, जो पुरबिया नाम से जाने जाते हैं और अपने को मूल काशीवासी समझते हैं। किंतु यदि गहराई से देखा जाये तो काशी का मूल वासी कोई भी नहीं है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

वाराणसी वैभव या काशी वैभव - सुनील कुमार झा

कोई आगे आया, कोई पीछे। यहाँ तक कि इस नगर के स्वामी बाबा विश्वनाथ तक राजा दिवोदास का प्रभुत्व समाप्त होने के बाद कैलाश से आकर यहाँ बसे। यों यह नगरी किसी एक वर्ग या संप्रदाय की न होकर, सबकी है। यहाँ के सभी लोग आब्रजक हैं, जो कालक्रम में काशीवासी बन गये। प्रत्येक का अपना अलग- अलग पहनावा, खान- पान और भाषा है।

लोग घरों में अपनी प्रांतीय भाषाएँ या आंचलिक बोलियाँ बोलते हैं, तो बाजार में काशिका बोली या खड़ी बोली का बोलबाला रहता है। सबकी अपनी भाषाएँ जीवित और सुरक्षित हैं। साथ ही हिंदी उनकी संपर्क भाषा बनकर सर्वोपरि प्रतिष्ठित है। प्रत्येक काशीवासी हिंदी बोलता और समझता है। मात्र यह स्थिति ही प्रमाणित करती है कि यदि लघु भारत रूपी इस काशी में हिंदी राष्ट्र भाषा या संपर्क भाषा होने में समर्थ है, तो बृहत्तर भारत में भी वह उसी पद की अधिकारिणी है। इतना ही नहीं, काशी में विश्व भर की भाषाएँ भी बोली और समझी जाती हैं। यहाँ की केवल विश्वनाथ गली का निरीक्षण किया जाये, तो वहाँ हिंदी, अंग्रेजी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ ही नहीं फ्रांसीसी, जर्मन, रूसी, चीनी, जापानी आदि भाषाएँ बोलने वाले पंडे, गाइड तथा अनेक दूकानदार मिल जायेंगे। इन्हीं सब विशेषताओं के चलते तो यह विश्वनाथ की नगरी कही जाती है।

भावनात्मक एकता : सह- अस्तित्व

इतनी विभिन्नताओं के होते हुए भी यदि कहा जाए कि ''चार चिड़ियाँ चार रंग और दरबे में जाकर एक रंग'' हो जाती है, तो यह कहावत इस नगरी पर पूर्णतः चरितार्थ होगी। भिन्न- भिन्न संप्रदायों, वर्गों तथा मतों में बँटे हुए, यहाँ के लोग सह- जीवन और सह- अस्तित्व के जीते- जागते नमूने हैं। वे 'जियो और जीने दो' के सिद्धांत का अक्षरशः पालन करते हैं। यहाँ के लोगों ने कभी इतर प्रांतीय कहकर किसी के प्रति घृणा नहीं प्रदर्शित की।

अंग्रेजी शासन काल में सांप्रदायिक विष के काफी बीज बोये गये, फिर भी यहाँ की मिली- जुली, हिंदू- मुस्लिम बस्तियों में एक हिंदू मुसलमानों को बाबा, चाचा, मामू, मौसी, ताई कहता है, तो मुस्लिम भी हिंदू बंधुओं के प्रति वैसे ही संबोधनों का प्रयोग करते हैं। हरिजन- सवर्ण संघर्ष तो नयी देन हैं, अन्यथा काशी की परंपरा तो ऐसी रही है कि गलियों मे सफाई करने वाली हरिजन महिलाओं को भी ब्राह्मण- क्षत्रिय जाति के लोग नानी, चाची, भौजी, जीजी या बहू कहकर बुलाते थे। यों स्पष्ट है कि आज के राजनेता देश में जिस भावनात्मक एकता के लिए एड़ी- चोटी का पसीना एक कर रहे हैं, वह इस नगरी की आत्मा में निवास करती थी और आज भी अनेक झंझावतों के आघात के बाद बहुलांश में उसी रूप में जीवित है। यह भावात्मक एकता और सहजीवन की झांकी न केवल यहाँ के साधारण नागरिकों में, अपितु विभिन्न धर्माचार्यों और देवी- देवताओं तक में आभासित है। प्रत्येक मतावलंबी की यहाँ गद्दी या मठ है, सभी प्रकार के देवताओं के मंदिर हैं। प्रत्येक के अनुयायियों की संख्या भी कम नहीं है, किंतु हम देखते हैं कि यहाँ शैव, वैष्णव , शाक्त, बौद्ध, जैन, सिख, ईसाई, शिया, सुन्नी आदि सभी एक घाट का पानी पीते हैं और काशीवासी होने में अपना गौरव समझते हैं।

सभी मतानुयायियों का सह- अस्तित्व ही इस बात का परिचायक है कि यदि कहीं वास्तविक धर्मनिरपेक्षता है, तो वह काशी में है। सुनने में अटपटा- सा लगता है कि हिंदुओं की सर्वप्रधान धर्मनगरी को धर्म- निरपेक्ष कैसे कहा जा सकता है, किंतु इस शब्द के निहितार्थ पर गौर करने में स्पष्ट हो जाएगा कि निरपेक्षता का अर्थ होनत्व नहीं है। धर्म- निरपेक्ष और धर्महीन में आकाश- पाताल का अंतर है। पूर्णतः धर्माचरण करते हुए भी कोई धर्म- निरपेक्ष हो सकता है। धर्म तो व्यक्तिगत आस्था की चीज है और उसके अनुरूप आचरण के लिए प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण स्वतंत्र है। निरपेक्षता, अन्य धर्मी के प्रति सहिष्णु होना है। हम अपना धर्म पालन करें और वे अपना, इस कारण किसी प्रकार का बैर- विरोध न हो, यही तो धर्म- निरपेक्षता है। इसका आदर्श काशी का जन- जीवन उपस्थित करता है।

यहाँ हिंदुओं की अधिक संख्या होते हुए भी, मुस्लिमों की बहुत बड़ी आबादी है। मदनपुरा, रेवड़ी तालाब, दालमण्डी, नयी सड़क, जैतपुरा, अलईपुर आदि मुहल्लों में लाखों की तादाद में मुस्लिम भाई रहते हैं और उन्हें पूरी मजहबी आजादी हासिल है। उनकी बड़ी- बड़ी मस्जिदें हैं, जहाँ से बड़े भार में ही लाउडस्पीकरों के द्वारा अजान की आवाज चौतरफा

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.

गूँजती है। इस पर अन्य धर्मावलम्बियों को कोई गिला नहीं है। हिंदू- मंदिरों से भी घंटे- घड़ियाल बजते हैं, सुप्रभातम् का भी प्रसारण होता है। सिखों के गुरूद्वारे हैं, जहाँ से सबद, कीर्तन, भजन का निनाद उठता है। ईसाइयों के चर्च में शांतिपूर्वक प्रार्थनाएँ की जाती हैं। छावनी क्षेत्र में उनकी अच्छी बस्ती भी हैं। बौद्धों का सर्वप्रधान केंद्र सारनाथ भी इसी वाराणसी में है। ये सभी भिन्न- भिन्न आस्था- विश्वास करने वाले, यहाँ प्रेम और सौहार्दपूर्वक एक परिवार के सदस्यों की तरह एक साथ रहते हैं। अतः यही कहना पड़ेगा कि वर्तमान भारतीय शासन- नीति की अंगभूत धर्मनिरपेक्षता सिद्धांत रूप में ही नहीं, प्रयोगात्मक रूप से यहाँ चिरकाल से जीवंत है।

ये ही सब कारण हैं कि काशी को संपूर्ण देश अपना समझता है और उसे सादर शीश नवाता है। काशी का कोई भी निवासी देश के किसी भाग में चला जाये और जब वहाँ वालों को ज्ञात होता है कि यह काशी से आया है, तो वे उसके प्रति श्रद्धावनत हो जाते हैं। सभी देशवासियों की दृष्टि में काशी पुण्यभूमि है, पुजनीय और वंदनीय है, यह देश का उत्तमांग है। उनकी धारणा है कि शंकर और गंगा के सान्निध्य से काशी भी सर्वसमर्थ है और उन्हीं महादेव तथा देव नदी की भांति भला- बुरा सब आत्मसात कर, उन्हें अपने रूप में ढ़ाल सकती है, जिसका जीता-जागता प्रमाण काशी का जनजीवन है।

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.